पात्र 1 - मनोहर (मास्टर)

पात्र 2 - प्रदीप (गांव का सरपंच)

(दोनों एकसाथ बैठे हुए जल प्रदूषण पर वार्ता कर है)

मनोहर - वर्तमान समय में हर तरफ प्रदूषण फ़ैल रहा है।

प्रदीप - सो तो है, लोगो के बीच जागरूकता की कमी से ही प्रदूषण फ़ैल रहा है।

मनोहर - अभी मैंने कल ही देखा, पड़ोस की औरत पूजा की अपशिष्ट सामाग्री कुए में डाल रही थी। वह सदैव ही ऐसा करती है उसे देखकर अन्य औरते भी वैसा ही करती है।

प्रदीप - आपने उन्हें जागरूक करने का प्रयास नहीं किया?

मनोहर - हमने कई बार उन लोगो के घर जाकर जागरूक करने का प्रयास किया परन्तु------

प्रदीप - परन्तु क्या?

मनोहर - परिणाम वही ढाक के तीन पात। बिना जागरूक हुए किसी भी प्रकार के प्रदूषण को लगाम नही लगाई जा सकती है।

प्रदीप - कल हम पंचायत भवन में गांव के सभी ज्येष्ठ नागरिको को बुलाएँगे।

मनोहर - इससे क्या होगा?

प्रदीप - वही पर सबको उदाहरण के साथ जागरूक करने का प्रयास किया जायेगा।

मनोहर - क्या आपको विश्वास है कि सभी लोग अपने कार्य के प्रति जागरूक होंगे?

प्रदीप - सभी लोगो को जागरूक होने का विश्वास तो नहीं है।

मनोहर - फिर आप क्या करेंगे?

प्रदीप - पंचायत भवन में सभी को जागरूक करते हुए कड़े दंड का प्रावधान किया जायेगा तब सुधार की गुंजाइस हो सकती है।

मनोहर - हां! दंड का प्रावधान ही उचित कदम होगा।

(अगले दिन सभी लोग पंचायत भवन आते हैं।)

प्रदीप - आज आप लोग युवा पीढ़ी हो, किसी को कुयें की अहमियत नहीं पता है। सभी के घरों में नल है, मोटर है, आराम से पानी मिल जा रहा है, लेकिन क्या आपको पता है इससे जलस्तर कितना नीचे जा रहा है।

मनोहर - जलस्तर नीचे जाने का मतलब यह है कि एक दिन ऐसा आ जाएगा जब पानी ही नहीं होगा और फिर आपको पानी के लिए दूर - दूर भटकना पड़ेगा।

(गाँव के सभी लोग एक - दूसरे का मुंह देखते हैं, तभी प्रदीप न्यूज़ चॅनेल्स की कुछ क्लिप चलाता है जिसमे महिलायें पानी के लिए बहुत दूर - दूर तक जा रही हैं और वहाँ भी बड़ी मुश्किल से पानी मिल रहा है।)

मनोहर अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए - जैसा कि आपने इन वडियो में सब कुछ देख लिया है, अगर अभी आप नहीं ध्यान दिए तो यही हाल हमारा भी होगा। आज से जो भी कुये में अपशिष्ट डालेगा, उसे जुर्माना लगाया जाएगा, क्योंकि कुएं जलस्तर को बनाएं रखते हैं, इसीलिए पहले के समय में कुएं, तालाब, पोखर आदि होते थे।